उपसंहार–हॉकी के प्रसिद्ध खिलाड़ी कुँवर दिग्विजय सिंह ने ठीक ही कहा है–"खेल के मैदान में केवल स्वास्थ्य ही नहीं बनता, बल्कि मनुष्य भी बनता है।" खिलाड़ी वे बातें सीखते हैं, जो नागरिक जीवन में हर समस्या को सुलझाने में सहायता करती हैं। खिलाड़ी का हृदय उदार होता है। जब वह मैदान में उतरता है तो उसके मन में जातीयता, प्रांतीयता, धर्म एवं भाषा के नाम पर कोई भेदभाव नहीं होता। पंजाबी हो या बंगाली खिलाड़ी भ्रातृ-भावना से प्रेरित होकर खेलते हैं।" खेलों के द्वारा भिन्न-भिन्न राज्यों तथा देशों में सद्भावना स्थापित की जा सकती है।

इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अवस्था के अनुसार किसी न किसी खेल में भाग लेने के लिए आवश्यक समय निकालना चाहिए, क्योंकि खेलों से लाभ ही लाभ है, हानि एक भी नहीं। शिक्षा में भी सफलता मिलती है, और जीवन भी सार्थक बनता है, परंतु जरूरत से ज्यादा खेलों में भाग लेकर शिक्षा को नहीं नकारना चाहिए, बल्कि दोनों में सही-सही संतुलन बनाकर जीवन में सफलता प्राप्त करनी चाहिए।

17. समय का सदुपयोग

लिखो व याद करो।

"समय और जीवन तो पूरक हैं एक-दूसरे के,
सच तो यह है कि समय का रूप ही जीवन है।"

रूपरेखा : ☆ भूमिका ☆ समय के सदुपयोग का महत्त्व ☆ विद्यार्थियों के लिए सदुपयोग ☆ कुछ उदाहरण ☆ उपसंहार

भूमिका–मनुष्य इस भूलोक की अनमोल कृति है। इसलिए मनुष्य का जीवन अमूल्य है और यह जीवन समय से बँधा हुआ है। जीवन और समय का गहरा संबंध है। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, मनुष्य का जीवन भी बीतता जाता है। इसलिए मनुष्य को समय का सही सदुपयोग करना चाहिए। जीवन के रूप में समय या समय के रूप में जीवन जितना भी मिला है उसी में कुछ कर दिखाना चाहिए।

समय के सदुपयोग का महत्त्व–समय का सदुपयोग हमारे जीवन की सफलता की कुंजी है। यह जीवन तो नश्वर और अनिश्चित है। न जाने मौत कब दस्तक देने आ जाए। इसलिए प्रतिदिन समय का सही-सही सदुपयोग करते हुए हमें अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए। इस अनिश्चित और नश्वर जीवन में ही हमें बहुत से कार्यों को पूरा करना है। जो व्यक्ति समय के महत्त्व को समझ लेता है वही जीवन में कुछ कर पाता है। यदि हमने अपने इस अमूल्य समय को व्यर्थ ही गपशप और आलस्य में गँवा दिया, तो हम जीवन में कुछ भी नहीं कर पाएँगे। तब सफलता हमसे कोसों दूर हो जाएगी। समय रूपी पूँजी समाप्त होने पर हम केवल हाथ मलते रह जाते हैं।

हिंदी-साहित्य के महान कवि कबीरदास ने भी समय के महत्त्व को बड़ी ही सुंदरता से दर्शाया है–

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब॥

अर्थात् कल का काम आज ही कर लेना चाहिए। न जाने अगले पल प्रलय ही आ जाए तो फिर मनुष्य उस काम को कब पूरा करेगा?

विद्यार्थियों के लिए सदुपयोग–विद्यार्थियों के लिए तो समय बहुत ही उपयोगी है। इस काल में वे अपने भविष्य के जीवन की नींव को खड़ा करके सफलता की ओर बढ़ते हैं; परंतु आजकल विद्यार्थी समय को व्यर्थ की बात कहकर टाल जाते हैं जो कि सरासर गलत है। टाल-मटोल, हँसी-मजाक और सैर-सपाटे में समय नष्ट करने वाले छात्र-छात्राओं को तो पछताने का भी अवसर नहीं मिलता। हर काम के लिए समय निश्चित होना चाहिए तथा कोई भी कार्य असमय नहीं करना चाहिए। जिन विद्यार्थियों के काम करने का कोई निश्चित समय नहीं होता, वे कायर और आलसी बन जाते हैं। जो अपने-अपने समय के एक-एक क्षण का सदुपयोग करता है, वही भाग्यवान होता है। ऐसा विद्यार्थी जीवन में सुखी एवं संतुष्ट रहता है।

कुछ उदाहरण–महात्मा गाँधी, रवींद्रनाथ ठाकुर, राजेंद्र प्रसाद, जगदीशचंद्र बसु, पंडित जवाहरलाल नेहरू आदि नेता समय का पूरी तरह से सदुपयोग किया करते थे। इसलिए वे इतने महान बन पाए। पंडित नेहरू प्रातः से रात्रि के बारह बजे तक निरंतर कार्य करते थे। उन्होंने तो जेल में रहकर भी अपना समय व्यर्थ नहीं खोया। विश्व-प्रसिद्ध पुस्तकें उन्होंने जेल में ही लिखीं।

उपसंहार–जन्म से तो प्रायः सभी व्यक्ति एक जैसे ही होते हैं परंतु समय के सदुपयोग में जो व्यक्ति जितना कुशल होता है, वह जीवन में उतनी ही उन्नति करता है। समय को नष्ट करना चरित्र की बहुत बड़ी दुर्बलता है। देर हो जाने पर एक नेता का समय तो नष्ट होता ही है साथ में उन लोगों का भी, जो नेता का भाषण सुनने के लिए घंटों प्रतीक्षा करते हैं। इसलिए बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़ों तक को समय की उपयोगिता का ध्यान रखना चाहिए। इसी में देश और समाज की भलाई है और राष्ट्र उन्नति के शिखर पर पहुँच सकता है।